नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'कस्तूरबा के नाम : आज़ादी का आंदोलन एवं महिलाएं' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटित

सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समझ का नाम है कस्तूरबा – कुलपति प्रो. मिश्र

वर्धा, दि. 05 अक्तूबर 2017 : कस्तूरबा गांधी ने महात्मा गांधी के साथ आज़ादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेवाग्राम और साबरमती आश्रम में कस्तूरबा के कार्यों से हमें पता चलता है कि कस्तूरबा ने सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक समझ को विकसित कर गांधीजी को संबल

प्रदान किया। 'बा' के समग्र व्यक्तित्व पर विचार कर हमें आज़ादी के आंदोलन में शामिल रहीं महिलाओं के कार्यों को सामने लाना चाहिए। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग की ओर से 4 एवं 5 अक्तूबर को 'कस्तूरबा के नाम : आज़ादी का आंदोलन एवं महिलाएं' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन समारोह में बुधवार को कार्यक्रम की अध्यक्षता करते

हुए बोल रहे थे। गालिब सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध गांधीवादी

लेखक एवं अध्येता प्रो. सुधीर चंद्रा, नई दिल्ली, बीज वक्ता के रूप में स्त्री अध्ययन केंद्र, इंदिरा गांधी

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की प्रो. सविता सिंह, केरल विश्वविद्यालय की प्रो. तंकमणि अम्मा, संगोष्ठी समन्वयक एवं विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ.

सुप्रिया पाठक मंचासीन थी। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी संयोजक शरद जायसवाल ने किया।

बीज वक्तव्य में प्रो. सविता सिंह ने कहा कि कस्तूरबा एक समर्पित महिला थी। 'बा' ने

गांधीजी के हर निर्णय में साथ दिया। उन्होंने कहा कि गांधी जी के कार्यों का प्रभाव कस्तूरबा पर पड़ा और वह कस्तूर कपाडिया से कस्तूरबा बनीं। उन्होंने कस्तूरबा को स्त्रीवादी दृष्टि से पढ़ने की जरूरत पर बल दिया। प्रो. सुधीर चंद्रा ने गांधी के अनेकांतवाद पर चर्चा की। उन्होंने अनेक संदर्भ ग्रंथों का

हवाला देते हुए गांधी और कस्तूरबा के जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं पर प्रकाश ड़ाला। प्रो. तंकमणि

अम्मा ने कहा कि गांधी जी ने महिलाओं को रजनीति तथा स्वतंत्रता आंदोलन में उचित स्थान दिया। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने स्त्री शिक्षा का आहवान करते हुए 'बा' को भी प्रोत्साहित किया। 'तुम्हारा

त्याग ही तुम्हारा बलिदान है' यह संदेश देकर उन्होंने महिलाओं का सम्मान भी बढ़ाया। दूसरे सत्र का संचालन डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ कस्तूरबा की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा

माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। प्रो. सुधीर चंद्रा का स्वागत कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने शॉल एवं स्मृतिचिन्ह से किया तथा अन्य अतिथियों का स्वागत वरिष्ठ प्रोफेसर मनोज कुमार, स्त्री अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अवंतिका शुक्ला, डॉ. सुप्रिया पाठक एवं डॉ. चित्रा माली ने किया। इस अवसर पर प्रो. के. के. सिंह, प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. शोभा पालीवाल, प्रो. प्रीति सागर, प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. अमित राय, डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. मिथिलेश कुमार, डॉ. शैलेश कदम, डॉ. आर. पी. यादव, डॉ. अखिलेश दुबे सहित अध्यापक, प्रतिभागी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।